International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मुंडारी कवि दुलाय चंद्र मुंडा की कविताओं में सौंदर्य-बोध

मंगल मुण्डा

शोधार्थी [हिंदी विभाग], कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, किस् मानित विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा

सारांश:

मुंडारी कवि दुलाय चंद्र मुंडा आधुनिक पीढ़ी मुंडारी भाषा साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्य निर्माता और जाने-माने कवि हैं। दुलाय चंद्र मुंडा को मुंडारी भाषा साहित्य के नवयुगीन काव्य-धारा के अग्रणी कवि माने जाते हैं। उनकी अपनी दो प्रमुख काव्य-संग्रह 'सुड़ा-संगेन'(नव पल्लव, 1966) और 'बम्बरू'(मशाल, 1978) मुंडारी कविताओं का संग्रह हैं, जिनका उन्होंने हिंदी में अनुवाद, कर आदिवासी समाज के भाषा प्रेमियों के लिए अत्यधिक सरल और लोकप्रियता बना दिया है। उनके दोनों काव्य-संग्रहों में सौंदर्य-बोध, आदिवासियों की परंपरिक जीवनशैली, संस्कृति, प्रकृति सामूहिक चेतना का मार्मिक दृश्य देखने को मिलता है। उनकी काव्य रचनाओं में बाह्य प्राकृतिक सौंदर्य तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण आदिवासी समुदायों की जीवनशैली, संघर्ष, लोक-आस्था, सामाजिक परंपराएं, संबंधों और सांस्कृतिक अस्मिताओं को भी गहराई से जोड़ने का कार्य करती है। इसके साथ ही उन्होंने अपने आदिवासी समुदायों की चिंताओं को भी अपने शिल्प कला के माध्यम से प्रस्तुत कर अपनी महत्ता स्थापित करती है। और अपने कविताओं के माध्यम से अपने आदिवासी समुदायों को बदलते समयानुसार आगे बढ़ते हुए अपनी मूल संस्कृति की रक्षा के लिए आधुनिक पीढ़ी के युवक-युवतियों को प्रेरित करता है। दुलाय चंद्र मुंडा की कविताओं में बहुलता से सौंदर्य-बोध, आदिवासी दर्शन, प्राकृतिक जुड़ाव और सामुदायिक चेतना की झलक देखने को मिलती है।

बीज शब्द: दुलाय चंद्र मुंडा, मुंडारी कविता, संस्कृति, प्रकृति, सौंदर्य-बोध।

परिचय:

मुंडारी कवि दुलाय चंद्र मुंडा आधुनिक युग के नवीन चेतना मुंडारी भाषा साहित्य के जाने माने कवि और सुप्रसिद्ध साहित्य निर्माता के जनक हैं। इनका जन्म 06 अक्टूबर 1942 ई. को खूंटी जिला अंतर्गत बारूडीह नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम रायसिंह मुंडा और माता का नाम पालो हस्सा था। "प्रो. दुलाय चंद्र मुंडा गोमकेअ: एंगाते दो टोटअ: दअ: जपअ: चिंचेल हातु आते को आउ लि:अ।"[1]
(प्रो. दुलाय चंद्र मुंडा की मां को टोटअ: दअ: गांव के निकट चिंचले से लाया था।) इसलिए बारूडीह गांव

के लोग अधिकतर उनको चिंचले नाम से ही जानते थे।

कृति रचना में योगदान:

आधुनिक मुंडारी साहित्य को आगे बढ़ाने में कितने ही नाम आते हैं। लेकिन उस अगली पंक्ति में युवा कवि दुलाय चंद्र मुंडा प्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ते हैं। दुलाय चंद्र मुंडा ने साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं में भी महत्वपूर्ण कार्य किया हैं। साथ ही उन्होंने आदिवासियों के सामाजिक जीवन के शोध कार्य में भी अमूल्य समय दिया। उनके योगदान को रेखांकित करते हुए डॉ. खातिर हेमरोम लिखते हैं- "दुलाय चंद्र मुंडा को नृत्य गायन, गीत कविता एवं आलेख रचने में विशेष अभिरुचि रही। मुंडा समाज के लोगों के बीच में ये काफी लोकप्रिय रहे, साथ ही अन्य समुदाय के लोग भी इनसे बहुत स्नेह रखते थे, मधुर होने के कारण इनका किसी से कभी कोई मतभेद नहीं रहा। साहित्य जगत में इनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।"[2]
दुलाय चंद्र मुंडा अपनी भाषाओं के साथ-साथ दूसरे आदिवासी हो, संथाली और उरांव भाषाओं के लिए भी महत्वपूर्ण कार्य किया। 'सुड़ा संगेन'(नव-पल्लव,1966) और 'बम्बरू'(मशाल,1978) उनकी दो मौलिक काव्य-संग्रह है, जिनका उन्होंने हिंदी अनुवाद कर भाषा और साहित्य प्रेमियों के लिए अत्यधिक सरल और लोकप्रिय बना दिया। दुलाय चंद्र मुंडा को इसी स्वतंत्र काव्य रचनों के कारण ही आदिवासी हिंदी कविता के प्रारम्भिक अग्रदूत कवि कहा जा सकता है। दुलाय चंद्र मुंडा ने दोनों ही काव्य-संग्रहों के माध्यम से मुंडाओं को अपनी भाषा, संस्कृति, परंपरा और अपनी जल, जंगल और जमीन के लिए मृत प्रेम को जागृत करने का कार्य करती है। 'सुड़ा-संगेन'(नव-पल्लव, 1996) कविता संग्रह के माध्यम से भाषा प्रेमियों को अपनी भाषा के प्रति सजग रहने के लिए कवि प्रेरित करते हैं। वहीं 'बम्बरू'(मशाल, 1978) कविता के माध्यम से कवि मुण्डारी भाषा साहित्य के क्षेत्र में क्रांति, सोये हुए युवाओं को जागृत करने के साथ-साथ अपनी मातृ भूमि और मातृ भाषा के प्रति प्रेम को पहचान कराना चाहता है।

दुलाय चंद्र मुंडा की काव्य विशेषताएं

आधुनिक युग के नयी पीढ़ी के कवियों में डॉ. रामदयाल मुंडा, उदय, काशीनाथ कांडे, बुदु बाबू, भैयाराम, गुंजल साय मिरू, बल्देव, सागू, सहदेव, राम आदि मुंडारी कवि हिंदी में उपस्थित हुए हैं, लेकिन नयी पीढ़ी के मुंडारी कवियों दुलाय चंद्र मुंडा का स्थान अन्यतम है। वे जितनी सादगी, सरल, संकोच, विनम्रता की प्रतिमूर्ति और सुशिक्षित नवयुवक हैं, उतना ही अपनी कविताओं में भी सरल, संकोची और विनम्र की विशेषता पायी जाती है। दुलाय चंद्र मुंडा के प्रथम काव्य-संग्रह 'सुड़ा-संगेन' (नव-पल्लव) के प्रारंभ में जगदीश त्रिगुणायत की यह टिप्पणी दुलाय चंद्र मुंडा के कविताओं के वैशिष्ट्य को रेखांकित करती है- "श्री दुलाय के गीतों में मिट्टी की वही गंध, जंगलों में वही हरियाली और झरनों का वही संगीत विद्यमान है जो सदा से मुंडा गीतों की विशेषता रही है। विषय-वस्तु और शिल्प दोनों पक्षों में ये अपनी परंपरा के अत्यन्त निकट है। वे ही उपमान, वे ही प्रतीक, पंक्तियों की वही पुनरवृत्ति, वे ही छन्द जिन्होंने सारी मुंडा

कविता का शृंगार किया है इनकी कविता का भी शृंगार कर रहे हैं।.... फिर भी इनके गीतों में ताजगी है। पुराने स्वरलय के ये गीत नितांत नवीन लगते हैं। इनकी अनुभूतियों में गहराई तो है ही, नये प्रयोगों ने इन गीतों में पर्याप्त सौंदर्य और प्रभाव भर दिया है।"[3] 'सुड़ा-संगेन' काव्य-संग्रह में विषय-वस्तु और शिल्प दोनों पक्षों में ये अपनी परंपरा के अत्यन्त निकट हैं। उनके कविताओं में कई सांस्कृतिक परंपराओं के साथ ही सौंदर्य-बोध का समावेश हुआ है। वहीं दुलाय चंद्र मुंडा की दूसरी काव्य-संग्रह 'बम्बरू'(मशाल) में देश, जाति, संस्कृति, सामाजिक उत्पीड़न, प्रकृति प्रेम और विरह मिलन की विशेषता पायी जाती है। दुलाय चंद्र मुंडा की कविता आदिवासी गीत परंपरा में प्रकृति के जीवन-यथार्थ के चित्र प्रस्तुत करता है। इन्ही विशेषताओं को चिन्हित करते हुए पुनीता जैन लिखती है- "दुलाय चंद्र मुंडा के गीतों के मौलिक स्वरूप में लय, ध्वनि और प्रवाह का सजीव रूप से निर्वाह हुआ है।"[4]

दुलाय चंद्र मुंडा की दोनों काव्य-संग्रह 'सुड़ा-संगेन' और 'बम्बरू' के माध्यम से अपने आदिवासी समुदायों की संघर्ष, दुख-तकलीप, भाई-चारा, प्रेम की भावनाओं का मार्मिक दृश्य देखने को मिलता है। पुनीता जैन लिखती है कि "प्रकृति के सान्निध्य में जीवन के माधुर्य का रसपान एक सुंदर सी कल्पना है, जिसका वास्तविक चित्र आदिवासी कलम उकेरती है। वस्तुत: प्रकृति, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, पक्षी, पहाड़, नदी, झरने, जंगल अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि आदिवासी जन-जीवन का अटूट हिस्सा है। अत: दुलाय चंद्र मुंडा के गीतों में प्रेम का स्वरूप प्रकृति से युक्त होकर ही अभिव्यक्त हुआ है।"[5]

दुलाय चंद्र मुंडा ने अपनी कविताओं में सारी मानव जीवनशैली की वैशिष्ट्य और विविध चिन्ताओं को अपने ही शिल्प कला के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

दुलाय चंद्र मुंडा की कविताओं में सौंदर्य-बोध:

दुलाय चंद्र मुंडा की कविताओं में सौंदर्य-बोध का चित्रण सहज, सादगी, सरलता और साहमूहिक सांस्कृतिक चेतना के रूप में प्रतिबिंबित हुआ है। उनकी कविता की सौंदर्य-बोध समकालीन हिंदी और आदिवासी साहित्य को एक नयी द्रष्टयव्य प्रदान करती है। दुलाय चंद्र मुंडा की कविताओं में इस तरह की सौंदर्य-बोध का चित्रण उनकी काव्य-संग्रह में निम्न उदाहरणों के माध्यम से देखा जा सकता है।

"सिउ चलु तबु पुरना कमी
मुंडा जगर तबु जोनोम् जगर
कबु अतुय तबु पुरन पोटोम्
जोतोन् केयतेबु जोगेव, नेयअञ: जगर।
इसु गोनोङन पूंजी तबु
टाका पैसाते किरिङकनमोग।
नेकन पूंजी कबु अदेय तबु
जोतोन् केयते बु जोगवे, कनमोग।"[6]

कवि दुलाय चंद्र मुंडा अपनी आदिवासी भाषा और संस्कृति के बारे में बताते हुए कहे रहें हैं कि कृषि कार्य हमारा आदि पेशा है। मुंडारी बोली हमारी जन्म भाषा है। पुरानी पूंजियों को नहीं बहायेंगे, यत्न से रखेंगे। ये बहुत ही मूल्यवान चीज है। रुपये पैसे से मोल नहीं मिलेंगा, ऐसी पूंजियों को नहीं खोयेंगे, यत्न से रखेंगे।

"बिर तबु चब तन
ओते तबु पीड़ि तन
दारू बु रोवा या;
गोड़ा पिड़ी रेबु रोवाया
सारी सारी!
उली, कंटड़, कुद बारू
मुद् हेस: जोतो दारू
दारू बु रोवाया;
हुड़िंङ मरङ तेबु रोवाया
सारी सारी!।
जेते ने:गे चब तन रे
जरगी लोसोद् हिजु: तन रे;
दारू बु रोवा या
जङ ते, कोतोतेबु रोवाया
सारी सारी!।
बिर तबु चबा जन् रे
दारू का नमोग रे
कोरेबु उम्बुलेन
रसिक चंद्र दुरङ केद
सारी सारी!।"[7]

जंगल खत्म हो रहा है धरती बंजर बन रही है; इसलिए आम, कटहल, जामुन, कुसुम, फारसा, पीपल आदि छोटे बड़े पेड़-पौधों को टांड़ के आड़ में रोपेंगे। गर्मी जब खत्म होगी, जब बरसात आएगी तो बीज और डाल काटकर रोपेंगे अगर हमलोग नहीं रोपेंगे तो जंगल खत्म हो जाएगा। उस समय पेड़-पौधे नहीं मिलेगा। कहां पायेंगे पेड़-पौधे और प्रकृति सौंदर्य खत्म हो जाएगा। दुलाय चंद्र मुंडा को पेड़-पौधे और जंगलों की नष्ट होने का भी गहरा चिंता होती है इसलिए अपने आदिवासी समुदायों से आह्वान करते हुए अपनी जिम्मेदारी लेते हुए पेड़-पौधों को रोप कर जंगल को पुन: संवारने का लक्ष्य निर्धारित करते हैं।

“हगा हगा पगा जन
ओते अड़ि चबाजन
ओड़अ: दुवर उजड़जन
अहो हगा चिमे चिकाकेद।”[8]

इस कविता के माध्यम से कवि भाई-भाई की प्रेम को दर्शाने की कोशिश करते हैं। वे भाई-भाईयों में प्रेम और मेल मिलाप से रहने का संदेश दे रहे हैं और कहे रहे हैं कि भाई-भाई में बैर हो गया। खेत बांटवारा करते-करते खत्म हो गया है। घर द्वार भी उजाड़ गया, हे भाई तुमने क्यों ऐसे कर दिया। भाई के समान सुख, आनंद और प्रेम को देश में देने वाला कोई नहीं है। हम एक घोंसले के चिड़िया के समान है, हमलोग को मैना-तोता की तरह बातचीत करनी चाहिए। भाई-भाई में मिलजुलकर आपस में प्रेम से रहने को कवि कहे रहे हैं।

“किरिङ बेसव का नामो:
कमी उदमी का नामो:
टका अटाना पुइला चौली जन भाई
चिलिकतेबु अपासुल।”[9]

कवि दुलाय चंद्र मुंडा आदिवासी संघर्ष के साथ संस्कृति पर हमला और आजीविका के लिए कठिनाइयों के स्वर को मुख्य रूप से प्रस्तुत करते हैं। कवि कहते है कि खरीद बिक्री भी नहीं मिलती। काम धंधा भी नहीं मिलता कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे? डेढ़ रुपया पैइला चवाल हो गया। कैसे हम जीवन निर्वाह करेंगे। इस कविता के माध्यम से कवि किस तरह से जीवन निर्वाह करेंगे की बात करते हैं।

“डुलकी लो: दुरङ रे रसिक:
कुड़ी कोप लेमरे सुसुन सुकुव,
मेन्दो ने सुकु हुड़िं खोंन्
बनो: सुकु सूती जन्ते।
मेन्दो ने अखड़ा दुड़ा
हतु तलरे बुगिन् गेय,
सिंगी सटुब् कमी लग को
मिद् कड़ी दुरङरे: रड़े:जद्।”[10]

ढोलक की ताल के साथ गाने में आनंद आता है। युवती से स्पर्श होने से नाचने में मन लगता है। पर, यह सुख तो क्षण भर के लिए ही। चेत जाने के बाद सुख नहीं नहीं मिलता है। परंतु यह अखड़ा गांव में अच्छा ही है, (क्योंकि) दिन भर के काम से थके जनों की थकावट को। गीत को एक कड़ी में ही दूर कर देता है। दुलाय चंद्र मुंडा की कविताओं में जन-जीवन के ऐसी मनोरम दृश्य अनेक गीतों में मिलता है। उपर्युक्त करम गीत में युवाओं के मेल-मिलाप के अनोखे दृश्यों का प्रतिबिंबित हुआ है। दुलाय चंद्र मुंडा की कविताओं में कलात्मक का कोई बनावटीपन न होकर सीधी तौर पर असंगति को प्रस्तुत किया है। उनकी कविताओं में आदिवासी संस्कृति, प्रकृति और आदिवासियत परंपराओं की प्रतिनिधत्व आवाजों को अपने सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के साथ ही आधुनिक युगीन-संदर्भ पर भी सचेत दृष्टि रखी है।

निष्कर्ष:

दुलाय चंद्र मुंडा आधुनिक मुंडारी भाषा साहित्य के जाने माने कवि और सुप्रसिद्ध साहित्य निर्माता और आदिवासी संस्कृति, परंपरा एवं आदिवासियत की प्रतिनिधि आवाज हैं। उनकी कविताएं सरल, सहज, सादगी और प्रेरणादायक है। उन्होंने आदिवासी समाज और देश के युगीन संदर्भ के विभिन्न बिंदुओं का भी सौंदर्य वैशिष्ट्यता के रूप में चित्रण किया है। उन्होंने अपनी कविता में कहीं-कहीं पर आधुनिकता बोध को अपनाने और प्रौढ़ता की गरिमा संतोष का आग्रह की बात कही है। दुलाय चंद्र मुंडा की अधिकतर कविताएं प्रकृति प्रेम, आदिवासी दर्शन, सामूहिक चेतना और जीवन-सीख की कविता हैं। हिंदी में आदिवासी हस्ताक्षर की यह उपस्थिति वैशिष्ट्य और चिंताओं को दुलया चंद्र मुंडा ने अपने ही शिल्प कला में प्रस्तुत करते हुए अपनी महत्ता स्थापित करती है। दुलाय चंद्र मुंडा अपनी कविता के माध्यम भाषा और संस्कृति को बचाना और यत्न से रखना चाहते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. बड़ायऊद्, डॉ. मनसिद्ध, 'होड़ो जगर गअ:इदि-गमुइदी जमा' (मुण्डारी गद्य-पद्य संग्रह), चौथा संस्करण: 2023, नेशनल प्रिंटर्स रांची- 834010, पृष्ट सं.- 01
2. हेमरोम, डॉ. खातिर, 'मुण्डारी भाषा साहित्यकारों का व्यक्तित्व-कृतित्व', प्रथम संस्करण: 2023, प्रगतिशील प्रकाशन, उत्तम नगर, नई दिल्ली, पृष्ट सं.- 87
3. मुंडा, दुलाय चंद्र, 'सुड़ा-संगेन' (नव-पल्लव), प्रथम संस्करण: 2023, झारखंड झरोखा, रातू रोड, रांची, पृष्ठ सं.- दो शब्द
4. जैन, पुनीता, 'आदिवासी कविता : चिन्तन और सृजन' सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-110002,पृष्ट सं.- 211
5. वही, पृष्ट सं.- 211-212
6. मुंडा, दुलाय चंद्र, 'सुड़ा-संगेन' (नव-पल्लव), प्रथम संस्करण: 2023, झारखंड झरोखा, रातू रोड, रांची, पृष्ट सं.- 03-04

7. मुंडा, दुलाय चंद्र, 'सुड़ा-संगेन' (नव-पल्लव), प्रथम संस्करण: 2023, झारखंड झरोखा, रातू रोड, रांची, पृष्ट सं.- 66-67
8. बड़ायऊद्, डॉ. मनसिद्ध, 'होड़ो जगर गअ:इदि-गमुइदी जमा' (मुण्डारी गद्य-पद्य संग्रह), चौथा संस्करण: 2023, नेशनल प्रिंटर्स रांची- 834010, पृष्ट सं.- 79
9. मुंडा, दुलाय चंद्र, 'बम्बरू'(मशाल), द्वितीय संस्करण: 2023, झारखंड झरोखा, रातू रोड, रांची, पृष्ट सं.-29
10. मुंडा, दुलाय चंद्र, 'सुड़ा-संगेन' (नव-पल्लव), प्रथम संस्करण: 2023, झारखंड झरोखा, रातू रोड, रांची, पृष्ट सं.- 65